चतुर्थः पाठः

सरल हिंदी अनुवादः हर लाइन हर शब्द का ऑपरेशन

प्रबुद्धो ग्रामीणः

कक्षा – 10 हिंदी

(हिंदी वाली संस्कृत)

UP BOARD EXAM

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक . ' संस्कृत खंड ' के ' प्रबुद्धो ग्रामीण : ' नामक पाठ से अवतरित है ।

- एकदा बहवः जनाः धूमयानम् (रेल) आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म ।

  एक बार बहुत - से मनुष्य रेलगाड़ी पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे ।

- तेषु केचित् ग्रामीणाः केचिच्च नागरिकाः आसन् ।

  उनमें कुछ ग्रामीण और कुछ शहरी थे ।

- मौनं स्थितेषु तेषु एकः नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत्

  उनके मौन रहने पर एक शहरी ने ग्रामीणों का उपहास करते हुए कहा --

- " ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति ।

  " ग्रामीण आज भी पहले की तरह अशिक्षित और मूर्ख हैं ।

- न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति ।

  न उनका विकास हुआ और न हो सकता है । "

- " तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत् ,

  उसके इस प्रकार के कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला—

- " भद्र नागरिक ! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु

  " हे शिष्ट शहरी , आप ही कुछ कहें ;

- यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति ।

  क्योंकि आप ही शिक्षित और बहुत जानकार हैं ।

- ' इदम् आकर्ण्य स नागरिकः सदर्प ग्रीवाम् उन्नमय्य अकथयत् ,

  " यह सुनकर उस शहरी ने घमण्ड के साथ गर्दन को ऊँचा उठाकर कहा

- “ कथयिष्यामि , परं पूर्वं समयः विधातव्यः । ”

  " कहूँगा ; किन्तु पहले (कुछ) शर्त बद लेनी चाहिए । "

- तस्य तां वार्ता श्रुत्वा स चतुरः ग्रामीण अकथयत् ,

  " उसकी इस बात को सुनकर उस चतुर ग्रामीण ने कहा-

- “ भोः वयम् अशिक्षिताः भवान् च शिक्षितः ,

  " अरे हम अशिक्षित हैं और आप शिक्षित हैं ;

- वयम् अल्पज्ञा भवान् च बहुज्ञः ,

  हम कम जानते हैं और आप बहुत जानते हैं

- इत्येवं विज्ञाय अस्माभिः समयः कर्त्तव्यः ,

  ऐसा समझकर हमारे साथ शर्त लगानी चाहिए

- वयं परस्परं प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः ।

  हम परस्पर पहेली पूछेगे ।

- यदि भवान् उत्तरं दातुं समर्थः न भविष्यति

  यदि आप उत्तर देने में समर्थ न होंगे

- तदा भवान् दशरूप्यकाणि दास्यति ।

  तो आप दस रुपये देंगे ।

- यदि वयम् उत्तरं दातुं समर्थाः न भविष्यामः

  यदि हम उत्तर देने में समर्थ न होंगे ,

- तदा दशरूप्यकाणाम् अर्धं पञ्चरूप्यकाणि दास्यामः । "

  तो (हम) दस रुपये के आधे (अर्थात्) पाँच रुपये देंगे । "

- " आं , स्वीकृतः समयः " ,

  " हाँ , शर्त स्वीकार है "

- इति कथिते तस्मिन् नागरिके स ग्रामीणः नागरिकम् अवदत् ,

  उस शहरी द्वारा ऐसा कहे जाने पर , उस ग्रामीण ने शहरी से कहा-

- " प्रथमं भवान् एव पृच्छतु ।

  " पहले आप ही पूछे ।

- " नागरिकश्च तं ग्रामीणम् अकथयत् ,

  और शहरी ने उस ग्रामीण से कहा-

- " त्वमेव प्रथमं पृच्छ " इति ।

  तुम ही पहले पूछो ।

- इदं श्रुत्वा स ग्रामीणः अवदत् " युक्तम् , अहमेव प्रथम पृच्छामि । "

  यह सुनकर वह ग्रामीण बोला" ठीक है , मैं ही पहले पूछता हूँ । "

- अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।

  "-बिना पैरों का है , किन्तु दूर तक जाता है; साक्षर (अक्षरयुक्त) है , किन्तु पण्डित नहीं है ।

- अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ॥

  मुखविहीन होने पर भी स्पष्ट बोलनेवाला है इसे जो जानता है , वह पण्डित है ।

- अस्या उत्तरं ब्रवीतु भवान् ।

  आप इसका उत्तर दें|

- नागरिकः बहुकालं यावत् अचिन्तयत् ,

  शहरी ने बहुत देर तक विचार किया ;

- परं प्रहेलिकायाः उत्तर दातुं समर्थः न अभवत् ,

  किन्तु (वह) पहेली का उत्तर देने में समर्थ नहीं हुआ ;

- अतः ग्रामीणम् अवदत् ,

  अतः ग्रामीण से बोला-

- अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि ।

  " मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ । "

- इदं श्रुत्वा ग्रामीणः अकथयत् , यदि भवान् उत्तरं न जानाति ,

  यह सुनकर ग्रामीण ने कहा , यदि आप उत्तर नहीं जानते हैं

- तर्हि ददातु दशरूप्यकाणि ।

  तो दस रुपये दें ।

- अतः म्लानमुखेन नागरिकेण समयानुसारं दशरूप्यकाणि दत्तानि ।

  अत : खिन्न मुखवाले शहरी ने शर्त के अनुसार दस रुपये दिए ।

- पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत् , " इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम् । "

  फिर ग्रामीण बोला- " अब आप पहेली पूछे ।"

- दण्डदानेन खिन्नः नागरिकः बहुकालं विचार्य न काञ्चित् प्रहेलिकाम् अस्मरत्

दण्ड देने से दुःखी शहरी बहुत समय तक विचार करके भी किसी पहेली को याद न कर सका ;

- अतः अधिकं लज्जमानः अब्रवीत् ,

  अतः अत्यधिक लज्जित होता हुआ बोला

- " स्वकीयायाः प्रहेलिकायाः त्वमेव उत्तरं ब्रूहि । "

  ' अपनी पहेली का उत्तर तुम ही दो !

Important Playlist for You

हिंदी -10th (2022)|Daily Classes 2022|New Syllabus| UP BOARD EXAM 2022
Gyansindhu Coaching Classes
Updated yesterday

साहित्यिक हिंदी -12th (2022)| Daily Live Classes 2022|New Syllabus|UP BOARD EXAM...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated today

सामान्य हिंदी -11th (2022) | Daily Live Classes 2022|New Syllabus|UP BOARD EXAM...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated 2 days ago

सामान्य हिंदी -12th (2022) | Daily Live Classes 2022|New Syllabus|UP BOARD EXAM...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated today

साहित्यिक हिंदी -11th (2022)| Daily Live Classes 2022|New Syllabus|UP BOARD EXAM...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated yesterday

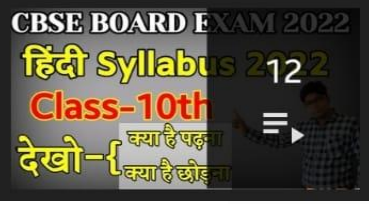

CBSE HINDI(Course B)10th Sparsh Bhag 2|NCERT HINDI हिंदी स्पर्श संचयन भाग 2...
Gyansindhu Coaching Classes
12 videos

कक्षा -10 संस्कृत|Sanskrit Class 10th|up board sanskrit| sanskrit gadya bharati clas...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated 3 days ago

कक्षा 12 संस्कृत|UP Board class 12th sanskrit|Raghuvansh mahakavyam|abhigyan sh...
Gyansindhu Coaching Classes
47 videos

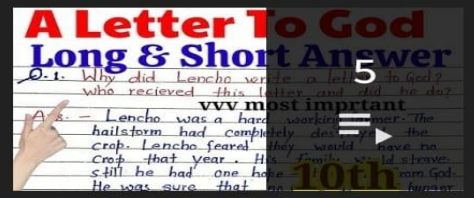

Class X NCERT 2022 English FIRST FLIGHT | ncert UP BOARD ncert cbs...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated today

कक्षा-10||सामाजिक विज्ञान-{इतिहास भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र)|Class ...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated 3 days ago

हिंदी -10th (2021)|Daily Classes 2021|New Syllabus| UP BOARD EXAM 2021
Gyansindhu Coaching Classes
143 videos

- तदा स ग्रामीणः विहस्य स्वप्रहेलिकायाः सम्यक् उत्तरम् अवदत् ‘ पत्रम् ' इति

  " तब उस ग्रामीण ने हँसकर अपनी पहेली का सही - सही उत्तर दिया “ पत्र ” ।

- यतो हि इदं पदेन विनापि दूरं याति ,

  क्योंकि वह पैरों के बिना भी दूर तक जाता है

- अक्षरैः युक्तमपि न पण्डितः भवति ।

  अक्षरों से युक्त होने पर भी पण्डित नहीं होता ।

- एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः ।

  इसी समय उस ग्रामीण का गाँव आ गया ।

- स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्राम प्रति अचलत् ।

  वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा ।

- स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्राम प्रति अचलत् ।

  वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा ।

- नागरिकः लज्जितः भूत्वा पूर्ववत् तूष्णीम् अतिष्ठत् ।

  शहरी लज्जित होकर पहले की तरह चुप बैठ गया ।

- सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन् ।

  सारे यात्री उस वाचाल शहरी को देखकर हँसने लगे ।

- तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति ।

  तब उसने अनुभव किया कि ज्ञान सर्वत्र सम्भव है ।

- ग्रामीणाः अपि कदाचित् नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति ।

  ग्रामीण भी कभी शहरियों से अधिक बुद्धिमान् होते हैं ।

JOIN TELEGRAM FOR PDF

VISIT WEBSITE FOR ALL PDF –

WWW.GYANSINDHUCLASSES.COM

THANKS FOR REACHING US

THANKS FOR WATCHING

PLEASE VISIT MY WEBSITE

PLEASE SHARE AND SUBSCRIBE